RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October -2018
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि और उनकी कविताओं का सामाजिक-राष्ट्रीय अभिधेय

डॉ. रमेश कुमार गोहे

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

राष्ट्रीय काव्यधारा आधुनिक युग के द्विवेदी युग के पश्चात आए छायावादी काव्य की ही एक काव्यधारा है। जिसकी कविताएँ अपना एक अलग प्रवाह बनाकर देशभक्ति की ओर मुड़ गई थीं। वे कवि देशभक्ति की कविताएं लिखने के लिए ही जैसे प्रतिबद्ध हो रहे थे और ऐसी ही कविताओं को लिखने के लिए अन्य कवियों का आह्वान कर रहे थे। कलम आज उनकी जय बोल जैसी कविता में कवि रामधारी सिंह दिनकर लेखनी को वीर शहीदों की शहादत पर कविता लिखने की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन कर रहे थे और इसके साथ ही जैसे यह अन्य कवियों के लिए संदेश भी है कि स्वतंत्रता की राह पर चलने वाले, लड़ने वाले और मरने वाले वीर शहीदों पर कविता लिखें। उनके पराक्रम और उत्साह को बढ़ाएं। देश के नौजवानों में देशभक्ति का आह्वान करें। यहाँ कविता का एक अंश उद्धृत करना प्रासंगिक होगा।

कलम, आज उनकी जय बोल
जला अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकाई जिनने चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी,
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।[1]

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता पुष्प की अभिलाषा एक ऐसी कविता है जो पुष्प की अभिलाषा व्यक्त कर रही है। पुष्प भी वीरों के मार्ग पर बीछ जाना चाहते हैं। जिस मार्ग से वीर देश पर बलिदान होने जा रहे हैं। कविता से अन्य लोगों में देश भक्ति की भावना जागृत होती है। यह कविता बिलासपुर के केंद्रीय कारागार से लिखी गई थी। वें स्वयं भी आजादी की लड़ाई में लगे थे। कविता भी लिखते थे और युद्धों का नेतृत्व में अपने हाथों में लेते थे। उनकी यह कविता यहाँ उद्धृत करना प्रासंगिक होगा, जिसमें पुष्प की अभिलाषा पुष्प की भावनाओं में देशभक्ति उजागर हुई है।

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध
प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक![2]

गोपीनाथ कालभोर ने माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय साहित्य साधना पर लिखा है "माखनलाल चतुर्वेदी का जो साहित्य अब तक का (1968) रहा है वह राष्ट्रीय एकता, अखंडता और विश्वबंधुत्व की बात तो करता ही है युवकों में राष्ट्रप्रेम, नवजागरण और समर्पण की भावना का लहू भी प्रवाहित करता है। यह नवजागरण ना हिंदू का, ना मुसलमान का, ना सिख का,ना ईसाईऔर बौद्ध का यह जागरूक मानवता का है।"[3]

माखनलाल चतुर्वेदी की एक कविता जिसमें शासन की काली करनी का वर्णन और जनता का दुख सामने आया है।

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट भर खाना,
मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना!
जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,
शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली ?
क्यों हूक पड़ी?
वेदना-बोझ वाली-सी;
कोकिल बोलो तो![4]

मैथिली मैथिलीशरण गुप्त ने मातृभूमि कविता में भारत माता का चित्र उकेरा और उसकी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध होने का संकल्प लिया। "भारत भारती के अमर गायक मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, राष्ट्र की वैविध्यपूर्ण संस्कृति, उसके प्राचीन गौरव, उसके प्राचीन गौरव, उसकी उदात्त चिंतन धारा को वाणी देने वाले एक अप्रतिम कवि थे।उन्होंने न केवल भारत के जन-मन में राष्ट्रीय चेतना का जागरण कर उसे स्वाधीनता आंदोलन के लिए प्रेरित

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

किया, बल्कि स्वयं भी आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर बहुत कुछ झेला और जेल भी गए। (स्वाधीनता सेनानी लेखक पत्रकार 142)

अगर मातृभूमि की रक्षा के लिए मरना मिटना भी पड़े तो उसके लिए वह हमेशा तैयार हैं।

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।
भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥ [5]

रामविलास शर्मा मैथिलीशरण गुप्त को गांधीवादी चिंतक मानते हैं "गांधीवादी स्वाधीनता आंदोलन के प्रतिनिधि कवि हैं मैथिलीशरण गुप्त।"[6]

गांधीजी का स्वाधीनता आंदोलन में पदार्पण और निराला का हिंदी कविता में पदार्पण लगभग एक ही समय होता है। स्वाधीनता आंदोलन के समय ही निराला ने देश प्रेम मातृभूमि के प्रेम पर,मातृभूमि के प्रेम पर लिखा और उनकी पहली प्रकाशित कविता भी मातृभूमि पर है ।

चूंकि राष्ट्रीय काव्यधारा कोई स्वतंत्र काव्यधारा ना होकर सामाजिक सांस्कृतिक समावेश लेकर चलने वाली धारा है। अतः इसी के अनुरूप निराला ने देश और समाज की तमाम रूढ़िवादी सामाजिक समस्याओं पर भी खूब लिखा। उनकी कई छोटी-छोटी कविताओं के साथ ही लंबी कविता राम की शक्तिपूजा भी है जिसमें वे लगातार चलने वाले युद्ध और देश की बार-बार होने वाली हार पर ही लिखते हैं –

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।"[7]

यह कविता एक तरह से निराला के जीवन, राम के जीवन और देश की दशा तीनों का एक साथ चित्र खींचती हुई चलती है। उनकी बादल राग, जागो फिर एक बार जैसी कविताओं में देशभक्ति की भावना निहित है "निराला युगीन यथार्थ के प्रति भी अत्यंत सजग थे। कुछ तो उनके जीवन की पीड़ा ने और कुछ उनकी मुक्त प्रतिभा ने उन्हें यथार्थ के विषम एवं निम्नतर पक्षों की ओर भी आकृष्ट किया।"[8]

किसी भी देश की राष्ट्रीयता का स्वर अपने अतीत की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा ही है। हमारा अतीत ही वह लक्ष्य है जो हमसे किसी ने छीन लिया है। भारत, अतीत का आजाद, स्वतंत्र भारत ही हमें हमसे अंग्रेजों ने छीन लिया है, जिसकी पुनर्प्राप्ति ही समस्त भारतीयों का लक्ष्य बन गया था। वहीं राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना की पहचान बनती है। इस काल और राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता धारा के तमाम कवियों ने कविताओं के रूप में स्वतंत्रता के यज्ञ में अपनी आहुतिदी है। "राष्ट्रीयता का संबंध देश के स्थूल सुख-दुख और आक्रोश के चित्रण से ही नहीं होता बल्कि राष्ट्र की आत्मा या चेतना की पहचान से होता है, वरन उसी से अधिक होता है।"[9]

राष्ट्रीय काव्यधारा की अवधि में जो प्रमुख रचनाएं प्रकाशित हुईं उनमें प्रमुख- कुरुक्षेत्र, जय भारत, नकुल, उन्मुक्त, रश्मिरथी, विक्रमादित्य, यशोधरा, पंचवटी, साकेत, प्रिय प्रवास, कामायनी, राम की शक्तिपूजा के साथ-साथ ही उन कवियों की अन्य कविताएं भी प्रमुख रूप से आजादी के संघर्ष की प्रेरणा बनीं जिनके रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, सियारामशरण गुप्त, उदयशंकर भट्ट, सोहनलाल द्विवेदी, श्याम नारायण पांडेय आदि कवि हैं। इन्हीं कवियों की कविताओं में से कुछ कविताओं की विवेचना यहाँ प्रासंगिक है।

माखनलाल चतुर्वेदी जी की एक और कविता यहाँ उद्धृत करना प्रासंगिक होगा। उन्होने जलियावाला की बेदी में जो भाव व्यक्त किए हैं वें बड़ी करुणा पैदा करते हैं । और करुणा के बाद जलियावाला बाग घटना पर क्रोध आता है। इस कविता में जहां सांप्रदायिक सद्भाव, हिन्दू-मुस्लिम एकता का भाव और देश के आजादी के संघर्ष मे एकजुट होकर अंग्रेजों को खदेड़ भगाने का आह्वान है। यह रचना 1920 कर्मवीर में प्रकाशित हुई थी।

रामचन्द्र मुखचन्द्र तुम्हारा,
घातक से कब कुम्हलाया?
तुमको मारा नहीं वीर,
अपने को उसने मरवाया।
जाओ, जाओ, जाओ प्रभु को, पहुँचाओ स्वदेश-संदेश,
"गोली से मारे जाते हैं भारतवासी, हे सर्वेश"!
रामचन्द्र तुम कर्मचन्द्र सुत बनकर आ जाना सानन्द,
जिससे माता के संकट के बंधन तोड़ सको स्वच्छन्द।
चिन्ता है होवे न कलंकित,
हिन्दू धर्म, पाक इसलाम,
गावें दोनों सुध-बुध खोकर,
या अल्ला, जय जय घनश्याम।
स्वागत है सब जगतीतल का, उसके अत्याचारों का,
अपनापन रख कर स्वागत है, उसकी दुर्बल मारो का,
हिन्दू-मुसलिम-ऐक्य बनाया स्वागत उन उपहारों का,
पर मिटने के दिवस रूप धर आवेंगे त्योहारों का।
गोली को सह जाओ, जाओ—
प्रिय अब्दुल करीम जाओ,
अपनी बीती हुई खुदा तक,
अपने बन कर पहुँचाओ।[10]

सोहनलाल द्विवेदी की रचनाओं का भी आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी एक कविता बढ़े चलो, बढ़े चलो में देश के वीर सपूतों का आह्वान है। यह कविता बिना अस्त्र-शस्त्र के ही आजादी की लड़ाई

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

में कूद पड़ने के लिए देश की जनता का आह्वान कर रही है। और हो भी क्यों ना ।अगर भारत के सभी लोग राष्ट्रीय लड़ाई में एक साथ सड़कों पर उतर आते तो आजादी मिलना असंभव नहीं होता। सोहनलाल द्विवेदी जी अपनी कविता में लिखते हैं –

हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न वीर वस्त्र हो,
हटो नहीं, डरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
रहे समक्ष हिम-शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए जन बिखर,
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही सुधा का घूंट हो,
जिये चलो, मरे चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,
अड़ो वहीं, गड़ो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मिसाल हो,
बढो़ नया कमाल हो,
झुको नही, रूको नही, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
अशेष रक्त तोल दो,
स्वतंत्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नही, मरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।[11]

द्विवेदी जी कविता कोशिश करने वालों की हार नहीं होती । एक जबरदस्त प्रेरक कविता है । यह कविता निरंतर संघर्ष का आग्रह करती है । इसमें उन्होने चींटी, गोताखोर और असफलता जैसी चीजों के उदाहरण देते हुये संघर्ष के मार्ग पर निरंतर सक्रिय रहने का संदेश दिया है ।

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।[12]

"स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास देखें तो पता चलता है कि अग्रिम पंक्ति में से कुछ लोग राजनेता थे। कुछ अहिंसक सत्याग्रही, कुछ क्रांतिकारी तो कुछ पत्रकार, साहित्यकार कवि भी जो अपनी कलम से लड़ाई लड़ रहे थे। इसमें से बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एक ऐसे व्यक्ति थे", जिनके व्यक्तित्व में चार गुण एक साथ समाहित थे।"[13] बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता भी हमें सामाजिक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय संदर्भों की पहचान मिलती है। एक ओर वे हम अनिकेतन कविता लिखते हैं, जिसमें संग्रहण की नहीं, बल्कि त्याग की भावना निहित है। यह कविता उन जमीदारों तालुकेदारों और सामंतों की ओर ईशारा करती है। जो सब हड़पकर रख लेना चाहते हैं। इसी कविता में कवि ने ठाट फकीराना को ज्यादा महत्व दिया है।

देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शोणित-उद्वेलन!
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सने ईंट-गारे में हम क्यों बने व्यर्थ में बेमन?
ठहरे अगर किसीके दर पर कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जो देखा कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन!
हम अनिकेतन!"[14]

विप्लव गायन कविता में कवि से आह्वान करते नजर आते हैं कि कविताओं में देश भावना निहित हो, ऐसे कविताओं का लेखन किया जाना चाहिए जिससे देश की जनता की कायरता मिट जाए और उनके अंदर वीरता का भावबोध पैदा हो। जनता के अंदर आजादी प्राप्त करने की इतनी तीव्र और प्रबल इच्छा हो कि वे प्रलय जैसे महानाश के लिए भी तैयार हो जाएं। युद्ध से घबराए नहीं, बल्कि सामने आकर अंग्रेजी शासन को ध्वस्त करें।

एक ओर कायरता काँपे,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

गतानुगति विगलित हो जाए,
अंधे मूढ़ विचारों की वह
अचल शिला विचलित हो जाए,
और दूसरी ओर कंपा देने
वाला गर्जन उठ धाए,
अंतरिक्ष में एक उसी नाशक
तर्जन की ध्वनि मंडराए,
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए,
नियम और उपनियमों के ये
बंधक टूक-टूक हो जाएँ,
विश्वंभर की पोषक वीणा
के सब तार मूक हो जाएँ
शांति-दंड टूटे उस महा-
रुद्र का सिंहासन थर्राए
उसकी श्वासोच्छ्वास-दाहिका,
विश्व के प्रांगण में घहराए,
नाश! नाश!! हा महानाश!!! की।[15]

रामधारी सिंह रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं का स्वर तो राष्ट्रवादी है ही। उनमें हुंकार भी है। उनकी हुंकार कविता की प्रासंगिकता तो श्रेष्ठ है। वे जब लिखते हैं कि कलम आज उनकी जय बोल, जिन्होंने इस मातृभूमि की रक्षा के लिए सब कुछ त्याग दिया।

कलम, आज उनकी जय बोल
जला अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकाई जिनने चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए, किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।[16]

दिनकर की कविता में वक्तृत्व का तत्व प्रबल है। उनके राष्ट्रवादी कविताएं दिल्ली, हाहाकार, विपथगा, समर शेष है आदि रचना इसी तत्व की श्रेष्ठ रचनाएं हैं। "दिनकर की विशेषता इस बात में है कि उन्होंने राष्ट्रीय काव्य जैसी गहरी निष्ठा के साथ पराधीनता के युग में लिखा वैसी ही तीखी आलोचना के स्वर में स्वाधीन देश में भी।"[17]

गांधी का पूरा जीवन एक विचारधारा बनकर उभर गया। गांधी आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। गांधी पर कई कविताएं, आलेख, उपन्यास, संस्मरण लिखे गए। उनमें दिनकर जी की एक श्रेष्ठ कविता गांधी भी है। कविता में उन्होंने गांधीजी का जो आंकलन किया है अन्य तमाम रचनाओं से अलग आंकलन है।

देश में जिधर भी जाता हूँ,
उधर ही एक आह्वान सुनता हूँ
जड़ता को तोड़ने के लिए
भूकम्प लाओ।
घुप्प अँधेरे में फिर
अपनी मशाल जलाओ।
पूरे पहाड़ हथेली पर उठाकर
पवनकुमार के समान तरजो।
तब भी हम ने गाँधी के
तूफ़ान को ही देखा,
गाँधी को नहीं।
वे तूफ़ान और गर्जन के
पीछे बसते थे।[18]

संदर्भ सूची

1. कविता कोश
2. कविता कोश
3. राष्ट्रवादी चिंतक माखनलाल चतुर्वेदी, गोपीनाथ कालभोर, केदारनाथ एंड संस, मथुरा, पृष्ठ 52
4. कविता कोश
5. कविता कोश
6. निराला की साहित्य साधना भाग 2, सं. रामविलास शर्मा, लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 133
7. कविता कोश
8. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, पृष्ठ 534
9. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, पृष्ठ 603
10. कविता कोश

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

11. कविता कोश
12. कविता कोश
13. स्वाधीनता सेनानी लेखक पत्रकार, आशारानी व्होरा, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, पृष्ठ 186
14. कविता कोश
15. कविता कोश
16. कविता कोश
17. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 222
18. कविता कोश

© RRIJM 2015, All Rights Reserved